पतला तथा पीछे का भाग अपेक्षाकृत मोटा होता है। मादा पतंगा फुनगियों पर अंडे दाल देती है। जिससे निकला पिल्लू अपने स्रावित धागे से ऊपरी पत्तियों को बांध देता है और उसी में रहकर मुलायम पत्तियों को खाता है। इससे पहले फुनगी और बाद में पूरा पौधा सूख जाता है।

प्रबंधन–

उपस्थित मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए। पक्षी बैठका लगाना चाहिए। इस कीटा का ज्यादा प्रकोप होने पर इन्डोसल्फान 35% ई०सी० या क्वीनलफॉस 25% ई०सी० एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए या किसी धूल कीटनाशी का भूरकाव अनुशंसित मात्रा में कर देने से भी यह कीट नियंत्रित हो जाता है।

5. लाही कीट– कभी-कभी पुष्पण के समय आसमान में बादल छा जाने और पुरवैया हवा चलने पर मसूर के पौधे पर लाही कीट का आक्रमण हो जाता है। लाही कीट सूक्ष्म आकृति वाला मुलायम पंख युक्त एवं पंख विहीन काले रंग का या हरे रंग का कीट होता है। मादा कीट बिना नर से मिले भी कीट को जन्म देती है। ये टहनियों पर बहुत जल्द ही अपना समूह बना लेते हैं। लाही कीट समूह में रहकर मुलायम पत्तियों या टहनियों का रस चूसते हैं, जिससे पौधे कमजोर एवं फलन में कमी आ जाती है।

प्रबंधन–

इस कीट के प्रबंधन के लिए अनुकूल वातावरण बनते ही प्रति हेक्टेयर 20 एलो स्ट्रीकी ट्रैप लगाना चाहिए। लाही कीट का पीले रंग से आकर्षण होता है, जिस कारण लाही कीट सटकर मर जाते हैं। मादा कीटों के ट्रैप हो जाने के कारण इनकी संख्या बढ़ नहीं पाती है। लेडी वर्ड बिटिल, सिरफीड फ्लाई आदि इस कीट के शत्रु हैं, लेकिन मौसम ठंढा होने के कारण लेडी वर्ड बिटिल की संख्या बढ़ नहीं पाती है। कीट की तीव्रता बढ़ जाय तो मधुआ कीट के लिए अनुशंसित किसी एक कीटनाशी या नीम आधारित कीटनाशी का छिड़काव करना चाहिए।

6. फली छेदक कीट (हेलीकोभरपा आर्मिजेरा)– पौधे में फली आने के पूर्व पिल्लु पत्तियों को जाते है। फली आने के बाद कीट अपना मुख्य भाग फली के अन्दर डाल कर दानों को खाता है तथा उसके शरीर का कुछ भाग फली के बाहर लटका रहता है। कीट के स्वभाव के अनुसार इसे घघरा, फोका, लड़का, आदि नामक नामों से जानते हैं।

प्रबंधन–

(i) मध्य नवम्बर से यदि किसान दस फेरोमोन फंदा जिसमें हेलिका भरषा अर्मीजोरा का लियोर लगा हो प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगावें, अधिकतर नर पतंगा मारे जाएगें, जिससे प्रजनन बाधित होगा और कीटों की संख्या में कमी आएगी।

(ii) यदि प्रति ट्रेप 6 नर कीट प्रतिदिन फसते हैं, तो इसका मतलब निकलता है कि अधिक संख्या में अंडा दिये जाने वाले हैं। इस स्थिति में उपलब्ध रहने पर 50 हजार प्रति हेक्टेयर की दर से ट्राईकोग्रामा छोड़े। यह कीट फली छेदक के अण्डे में अपना अण्डा डाल देता है, जिससे ट्राईकोग्रामा कीट निकलते हैं। NPV (न्यूक्लीयर पोलीहाईड्रोसिस वायरस) 250 एल०ई० का घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

(iii) प्रकाश फंदा लगाकर पतंगों को नष्ट किया जाना चाहिए।

(iv) पंक्षी बैठका (वर्ड पर्चर) खेत में बांस का "T" आकार का बीस पंक्षी बैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टेयर लगाना चाहिए। इस पर पंक्षी बैठते हैं तथा पिल्लुओं को भक्षण कर फसल में इनकी संख्या को नियंत्रित रखते हैं।

(v) **इसके नियंत्रण के लिए–**

- इण्डोसल्फॉन 35 प्रतिशत ई०सी० 1-1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से या,
- मोनोक्रोटोफॉस 36 प्रतिशत तरल 750 मि०ली० हेक्टेयर की दर से या,
- डायमोथोएट 30 प्रतिशत ई०सी० 250-300 मि०ली० हेक्टेयर की दर से या,
- क्यूनलफॉस 25 प्रतिशत ई०सी० 750 मि०ली० से एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से या,
- साईपरमेथिन 20 प्रतिशत ई०सी० 250-300 मि०ली० हेक्टेयर की दर से।

उक्त कीटनाशियों का प्रयोग तब करें जब बाजार में नीम आधारित या जीवाणु आधारित कीटनाशी उपलब्ध न हो। फलीछेदक कीट का आर्थिक क्षति स्तर प्रति 5 पौधों पर एक पिल्लू है।

आलेख : **लाल बचन राम,** दलहन विकास पदाधिकारी, टालक्षेत्र बिहार, बड़हिया

प्रकाशक : **उप कृषि निदेशक (सूचना), बिहार, पटना**

दूरभाष : 0612-2928402, E-mail : infoagri-bih@nic.in

वेबसाइट : www.krishi.bih.nic.in

मुद्रक : विद्या प्रिन्टर्स, शिवपुरी, पटना-23, M-9234849923

बिहार सरकार

कृषि विभाग

समेकित कीट रोग प्रबन्धन आधारित

मसूर की खेती

परिचय–

मसूर एक रब्बी की दलहनी फसल है। मसूर सबसे अधिक सुपाच्य एवं पुरानी दलहनी फसलों में से एक है। जिसे वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों में भी किया जाता है। इनमें 25% प्रोटीन, 60% कार्बोहाइड्रेट और 11% पानी होता है। मसूर उत्पादन का भारत का पहला स्थान है।

जलवायु– बिहार के सभी क्षेत्रों की जलवायु इसकी खेती के लिए उपयुक्त है।

मिट्टी– सभी प्रकार के मिट्टियों में इसकी खेती की जा सकती है पर दोमट मिट्टी अति उत्तम है।

प्रभेद– वी०आर० 25, पंत एल० 406, एल० 12, अरूड़, पंत एल 639, के० 75, पी०एल० 45 ।

बीज दर– 45 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर।

बुआई की दूरी– पौधे से पौधे की दूरी 10 से०मी० एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 से०मी०।

बोने का समय– 15 अक्टूबर से 19 नवम्बर तक।

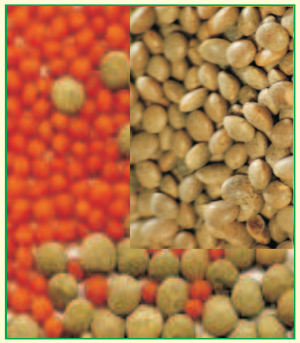

बीजोपचार– फफूंदी नाशक बेभिष्टीन 2 ग्रा०/ कि० या थिरम 2.5 ग्रा०/कि० या ट्राईकोडरमा भिरिडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करने के 24 घंटे बाद कीटनाशी क्लोरपाइरीफास 20 ई०सी० आठ मि०ली० प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। फिर 2 दिन बाद राईजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

पोषक तत्व– 100 किलोग्राम डी०ए०पी० प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के समय उपयोग करें।

मसुर के रोग

1. ऊखड़ा रोग– मसूर फसल को ऊखड़ा रोग से बचाने के लिए चना अनुशंसित ऊपचार अपनाएँ।

प्रबंधन–

(i) खेत को ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कर बिना पाटा दिए छोड़ देना चाहिए।

(ii) लगातार तीन (3) वर्ष तक फसल चक्र अपनाए यानि दलहनी के बदले तेलहनी, गेहूँ, मक्का लगावें।

(iii) उखड़ा रोग रोधी किस्मों का चुनाव करें।

(iv) थीरम, कैप्टान, ट्राईकोडरमा के अनुशंसित मात्रा से बीजोपचार करें।

(v) ट्राईकोडरमा के अनुशंसित (2 से 5 किलोग्राम) मात्रा से मिट्टी शोधन करना लाभप्रद होगा।

बीज को मिट्टी में 8 से 10 से०मी० गहराई में गिराने से उखड़ा रोग का प्रभाव कम होता है।

2. हरदा रोग– मसूर में रोग यूरोमाईसीज साइसरीज (एरीटीनी) नामक फफूंद से होता है।

पौधों में वानस्पतिक वृद्धि ज्यादा होने, मिट्टी में नमी बहुत बढ़ जाने और वायुमंडलीय तापमान बहुत गिर जाने पर इस रोग का आक्रमण होता है। पौधों के पतियों, तना, टहनियों एवं फलियों पर गोलाकार प्यालिनुमा सफेद भूरे रंग का फफोले बनते हैं। बाद में तना पर के फफोले काले हो जाते हैं और पौधे सूख जाते हैं। पौधों पर इस रोग का आक्रमण जितना अगात होता है, क्षति उतना ही अधिक होती है। इस रोग से 80 प्रतिशत तक क्षति पाई गई है। फसल में यह रोग हर वर्ष नहीं आता है। पौधे में रोग के आक्रमण के बारे में तब जान पाते हैं जब फफूंद प्रजननता अवस्था में रहता है। इसलिए फफूंद के लिए उपर्युक्त वातावरण बनते ही सुरक्षात्मक उपचार करना चाहिए।

प्रबंधन–

(i) रोग रोधी प्रभेध का चुनाव करना चाहिए।

(ii) फफूंद नाशी से बीजोपचार करना चाहिए।

(iii) फफूंद के उपर्युक्त वातावरण बनते ही मेनकोजेब 75% घुलनचूर्ण 2 किलोग्राम का सज्ञात्मक छिड़काव करना चाहिए।

3. मृदरोमिल रोग– मसूर में यह रोग इरीसाफी पोलिगोनाई नामक फफूंद होता है। बोआई के लगभग तीन महीने बाद रोग के लक्षण प्रकट होते हैं पहले पत्तियों पर छोटे सफेद फफोले बनते हैं जो बाद में तना एवं फलियों पर भी छा जाते हैं।

प्रबंधन–

इस रोग के प्रबंधन के लिए फसल अवशेष को जला देना चाहिए। घुलनशील सल्फर 3 कि०ग्रा०/ हे० या ट्राइडेमार्फ 80% (कैलेक्सीन) 500 से 600 मि०ली०/ हे० की दर से छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार 15 दिनों बाद छिड़काव दुहराया जा सकता है।

मसूर के कीट

1. कजराकीट– कट वर्म (कजराकीट) कभी-कभी चना उत्पादक क्षेत्रों में कटवर्म समूह के कीटों का आक्रमण हो जाता है। कजरा कीट या पिल्लू 3-4 से०मी० लम्बा काले भूरे रंग का चिकना एवं मुलायम होता है। दिन में पिल्लू मिट्टी में छिपे रहते हैं और शाम में निकलकर पौधे को काटते हैं। यह कीट बहुभक्षी है और दलहनी के अलावे मक्का, आलू, तम्बाकू आदि में क्षति करता है।

प्रबंधन–

(i) खड़ी फसल क्षति नजर आने पर खेत में कुछ-कुछ दूरी पर खरपतवार का ढ़ेर लगा देना चाहिए। सवेरे होते ही कीट इन ढ़ेरों में छिप जाता है, जिन्हें चुनकर नष्ट कर देना चाहिए।

(ii) खड़ी फसल में क्लोरोपाईरी फॉस 20% ई०सी० 25 ली० या इण्डोसल्फॉन 35% ई०सी०, क्यूनलफॉस 25% ई०सी० 1 लि० प्रति हेक्टेयर की दर से शाम में छिड़काव करना लाभप्रद हो सकता है।

(iii) सिंचाई दिए जाने वाले फसलों में इस कीट का आक्रमण होने पर सिंचाई कर देना चाहिए।

2. मधुआ कीट– यह हल्के रंग के छोटे आकार का फुदकने वाला कीट है। कभी-कभी इसका आक्रमण मसूर की आरंभिक अवस्था में पौधों पर हो जाता है। यह शिशु एवं व्यस्क दोनों ही फसलों पर क्षति पहुँचाता है।

प्रबंधन–

(i) फसल में उपस्थित मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए। पौधे-से-पौधे की दूरी अनुशंसा के आधारित होना चाहिए तथा फसल खर पतवार से मुक्त रहना चाहिए। इसके अलावे अंतिम उपचार के रूप में मोनोक्रोटोफॉस 36 प्रतिशत तरल या डायमोथोएट 30 प्रतिशत ई०सी० 750 मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर छिड़काव किया जा सकता है।

3. थ्रिप्स कीट– यह सूक्ष्म आकृति वाला काला एवं भूरे रंग का बेलनाकार कीट होता है। रैस्पींग एण्ड सकिंग टाईप का मुख्य भाग होने के कारण यह पत्तियों को खुरचता है तथा उससे निकले द्रव्य को पीता है। पत्तियों पर छोटे सफेद दाग बन जाते हैं व पौधे की बढ़वार रूक जाती है।

प्रबंधन–

फसल में उपस्थित मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए। पौधे से पौधे की दूरी अनुशंसा के आधारित होना चाहिए तथा फसल खर पतवार से मुक्त रहना चाहिए। इसके अलावे अंतिम उपचार के रूप में मोनोक्रोटोफास 36% तरल या डायमोथोएट 30%, ई०सी० 750 मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर छिड़काव किया जा सकता है।

4. लूर्सन कैटर पिलर (लैफिग्मा)– इस कीट का पिल्लू लगभग एक से०मी० लम्बा हरे रंग का होता है। जिसका अगला भाग